मय्यत
के अहकाम

लेखक :
शेख एहमदअली राज

कीमत 3-00 रु.

नाशिर :
* तनज़ीम-ए-इशाअत-ए-इस्लामी तालीम *
66, डॉ० ज़ाकिरहुसैन मार्ग, उदयपुर

न्यू राज प्रिंटिंग प्रेस, काज़ीवाड़ा, उदयपुर

१४, शाबान सन १४०३ हि. की शब को उदयपुर में आँधी आयी, इस आँधी से खांजीपीर कॉलोनी में तीन मासूम बच्चे पड़ोसी के मकान की दीवार गिरजाने से लुकमए-अजल हो गए । (इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेऊन)

1. **खैरून्निसा बिन्ते सैफुद्दीन भाई बामनियावाला, 18 वर्ष**
2. **खदीजा बिन्ते अलीमोहम्मद भाई ,, ,, 25 वर्ष**
3. **जूज़र इब्ने अब्दुलहुसैन भाई साई वाले 14 वर्ष**

ये बच्चे और उनके घरके दूसरे लोग गर्मी के सबब छत पर सोए हुए थे ।

सैफुद्दीनभाई और उनकी ज़ौजा शीरीनबाई और एक बच्ची को भी चौटें आयीं । शीरीनबाई बुरी तरह जख्मी हुई । कई दिनों तक उन्हें अस्पताल में दाखिल होकर इलाज कराना पड़ा ।

इस ना-गहानी हादसे से सारे शहर में रंजो गम की घटा छा गयो ।

जख्मियों को कॉलोनी में बसने वाले यूथी भाईयों ने फौरन मल्बे से बाहर निकाल कर अस्पताल पहुंचाया । वफात पाए हुए तीनों बच्चों को (पुलिस कार्यवाई और पोस्ट मार्टम की कार्यवाई के बाद) लाशें रसूलपूरा की मस्जिद में लाई गयीं वहां तजहीजो-तकफीन व नमाजे जनाजी की रस्म अदा की गयो व खांजीपीर के कब्रस्तान में तदफीन की कार्यवाई की गयी । हजारों यूथी मूमिनीन ने आखिरी रसूम में शिरकत की ।

हमारी यह किताब इसी मौके पर छप रही है। लिहाजा हम इसे इन तीन मासूमों के नाम मनसूब करते हैं और अल्लाह-त्आला से दुआ करते हैं कि उनके गुनाह माफ करे और उनपर रहमत करे। आमीन !

शेख एहमदअली राज

नोट:–पेज नं. ७ की बाकी रही दुआ बायें हाथ को धुलाते हुए पढ़े।

अल्ला हुम्मा लातुतेही (हा) किताबहु (हा) बे शिमालेही (हा) वला मिन वरा-ए-ज़ाह-रेही (हा)

मय्यत को उसी जगह के मकबरे में दफनाना चाहिये, जिस जगह वह मर गया हो अगर वहां मकबरा नहीं तो नजदीक के किसी गांव के मकबरे में दफन करना चाहिये। एक जगह के मकबरे को छोड़कर और किसी जगह ले जाना बिदअत है जैसे कि माथेरान से बम्बई या बम्बई से किसी और जगह ले जाना ऐसा करने वालों को मौला अली सख्त सज़ा देते थे। और फरमाते थे कि मुर्दो को वहीं दफन करो जहां उनका इन्तेकाल होगया हो।

कब्र सादा बनाना और उसपर सादा छत बनाना जाईज़ है।

बिस्मिल्ला हिर्रहमां निर्रहीम

तबारकल लज़ी बे-यदेहिल मुल्को वहोवा अला-कुल्ले शय-इन-क़दीर अल्लज़ी ख़लक़ल हयाता वल मौता ले-यब-लोवाकुम अय्योकुम अह-सनो अ-म-ला ।

अल्लाह तआला जिस कि हाथ में हर मुल्क हे और वह (अल्लाह तआला) हर चीज़ पर क़ादिर (ताकतवाला) है । उसने मौत और हयात (जिन्दगी) को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़-माइश की जाए, कि कौन तुम्हारे में से अच्छा अमल करने वाला है । सलवात और सलाम मोहम्मद और आले मोहम्मद पर, जिन्होंने हमें मौत और हयात (जिन्दगी) की हक़ीक़त बताई. कि मौत हक़ है, और इबरत भी है और हिकमत भी मुमिन के लिये खुशी और नजात का सबब है । और जन्नत का रास्ता, बीमारी से गुनाहों की सफ़ाई होती है । इसलिये बीमारी में सब्र करना किसी से शिकायत न करना बहोत सवाब है । एक दिन के बुख़ार से एक साल के गुनाह बख्शे जाते हैं । बीमार की तीमार दारी और तबीअत

पुर्सी करना ज़रुरी है, तीन रोज़ के बाद तबीअत पुर्सी को जाना चाहिये, औरतों को नहीं जाना चाहिये । बीमार के पास खाना, पीना और ज्यादा बैठना मना है । बीमार की हर तरह से मदद करना और उसको आराम पहुंचाना सुन्नते रसूल है । बीमार को आखिरी वक्त में क़िबला रु (क़िबले के सामने मुंह) करके उसके मुंह से कल-मए शहादत पढ़वाना चाहिये । और उसके सिराहने बैठकर आयातुल कुरसी, सुरतुल-बक़र का आखिरी रुकु और यासीन पढ़ने के बाद दायें (सीधे) कान में अज़ान और बायें (डाबे) कान में इक़ामत कहना चाहिये । बीमार का चेहरा रोशन हो, और पैशानी से पसीना टपकता नज़र आए हाथ सुकड़ते हों, दो नकसोड़े फूले हुवे हों और बायें (डाबी) आंख से आंसू निकलते हों तो समझना चाहिये के उसका आखिरी वक्त है,

उस वक्त उसको क़िबला रू सुला (लिटा) कर हाथ व पैर बराबर कर देना चाहिये जाँ-कनी के वक्त मुमिन के सामने पंजतन–पाक तशरीफ़

लाते हैं, और जन्नत की खुश-ख़बरी सुनाते हैं। हर शख्स को हमेशा मौत की याद ताज़ा रखनी चाहिये, और नेक अमल का तोशा साथ लेना ही अकल-मंदी है।

बीमारी और मौत पर सब्र करने से रहमत और हिदायत मिलती है. क्योंकि सब्र ईमान की बुनियाद है। जब भी किसी की मौत या मुसीबत की खबर आए तो **"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेऊन"** पढ़ना चाहिये।

किसी की मौत पर नोहा करना, वलाप करना चीखना-चिल्लाना, मरने वाले की तारीफ करना कत्अन हराम है। लेकिन दिल में रिक्कत हो और आंखों से आंसू जारी हो तो कोई बात नहीं है। राहे खुदा में मरना तो शहादत है, लैकिन सख्त बिमारी से मरना, पानी में डूबकर मरना, औरतों की ज़च्चगी में मौत, आग से जलकर एसी ही शक्ल में दर्दनाक मौत भी एक तरह से शहादत है। खुदकुशी (आत्महत्या) करना हराम है। यह

बहोत बड़ा गुनाह है, जिसका नतीजा जहन्नम है।

मय्यत का गुसल

मरने वाला शख्स चाहे कोई भी हो और कैसी भी शाकेलत से मौत हुई हो उसको गुसल देना फिर कफन पहनाकर उसके जनाजे पर नमाज़ पढ़ना और दफ़न करना फर्ज है। इस नेक अमल का सवाब तमाम गुनाहों की बख्शिश है। गुसल देने वाले का दर्जा बहोत ऊँचा होता है। रसूले खुदा (स.अ के गुस्साल मोलाना अली थे और जिब्रइल आपके मददगार थे। और आपने ही मौलातेना फ़ातेमा (स.अ) को गुसल दिया था। ब-वक्त जरूरत जब कोई औरत गुसल देने वाली न होतो शौहर अपनी बीवी को गुसल दे सकता है। इसी तरह कोई मर्द गुसल देने वाला न हो तो बीवो अपने शोहर को गुसल दे सकती है। लेकीन मय्यत के बदन पर कपड़ा रखकर गुसल दे, अगर एसी हालत में शौहर या बीवी भो न होतो मैयत को गुसल दिये बगैर ही दफ़न कर देना चाहिये।

शहीद को उसकी शहादत की जगह (मेदाने-जिहाद) गुसलो-कफ़न दिये बगेर उनके कपड़े में ही दफ़न कर देना चाहिये । सूरज के गुरूब होने के बाद मरने वाले को सुबह सूरज निकलने के बाद दफ़न करना चाहिये । और तुलू के बाद मरने वाले को ज़वाल के पहले दफ़न करना चाहिये । और दिन के आखिर में मरने वाले को (गुरुब से पहले) रात में दफ़न करना चाहिये । किसी मसलेहत की खातिर ताख़िर करना अच्छा नहीं । मय्यत को तीन गुसल देना चाहिये । पहला गुसल बोरडी के पत्ते और कंकूरी वाले पानी से दूसरा गुसल कपूर सुखड़ (संदल) के खुशबुदार पानी से, तिसरा गुसल खालिस पानी से दिया जाये, हर एक गुसल की शाकेलत जनाबत के मानिन्द होती है । याद रहे मैयत की जान जिस्म से निकलती हे उस वक्त मनी निकलती ही है. इसलिये गुसल की नियत में कहाजाता हे कि जनाबत को दूर करने के लिये ये गुसल दिया जा रहा है ।

हर एक गुसल के पहले इस्तिन्जा फिर वुजू

कराई जाए ग़स्साल (गुसल देने वाला) मैयत के कपड़े उतारे उस वक्त घुटन से टूटी तक की जगह एक कपड़ा डालदे फिर गुसल देने वाला अपने बायें हाथपर कपड़े का एक टुकड़ा लपेटे ।

उसके पहले दोनों हाथों से मय्यत के पेट को दबाए ताकि अन्दर कोई ग़िलाज़त रहगई हो तो निकल जाये फिर इस्तिन्जा कराए और कहे:-

अल्लाहुम्मा हस्सिन फर-जहु अन-मआस का हत्ता-लाया-से-यका वसतुर और-त-हू वग़फिर ज़ल्लत-हूं ।

ग़स्साल इस्तिन्जा के बाद बायें हाथ वाले कपड़े को अलग कर और दोनों हाथों को पाक करके दोनों हाथों को मिलाकर इस तरह निय्यत दिलायें ।

अल्लाहूम्मा इन्नी उवज्जेओ हाज़ल मय्यता वूजू अस-सलाते फक़बलहो या अर-हमर राहेमीन.

(औरत के लिये हाजेहिल मय्ययता कहे) और हर जगह (हू) के बदले (हा) कहे । जैसा कि फ़रजहू, औ-र-तहू, ज़ल्लत-हू की जगह फ़रजहा औ-र-त-हा, ज़ल्लत-हा कहे

मय्यत को कुल्ली नहीं कराना चाहिये और नाक

में पानी भी नहीं जाना चाहिये, फिर मय्यत के मुंह को धुलाते हुवे कहे ।

अल्ला-हुम्मा बय्यिज़-वजह-हू (हा) बे-नूरे मअ-रे फतेका यवमा तु-बय्येज़ो वुजू-हल मुमेनीना व-तुसव्वेदो वुजुहल मुश्रेकीना व-नव्वीरहो बे नुरिल ईमान ।

फीर दांये (सीधा) हाथ को धुलाते हुए पढ़े–

अल्ला-हुम्मा आतेही (हा) किता-बहू बे-यमीनेही (हा) वला तू-तेही (हा) बे-यसारेही हा ।

फिर सर की मसा कराते हुवे पढ़े ।

अल्ला-हुम्मा ग़श-शही हा बे-रह-मतेका मिन रह-मतेका ।

कान की मसा कराते वक्त पढ़े ।

अल्ला-हुम्मा अस-मे-अ हो हा मुनादेया ज़न्नते का फी जन्नतीक ।

गरदन की मसा कराते वक्त पढ़े ।

अल्लाहुम्मा आ-तिक रक-ब-त-हू मिनन्नारे वाह फ़ज़हो हा मिनस सला सिले वल अग़लाले या अज़ीज़ो या जब्बारो ।

पैर की मसा कराते वक्त पढ़े ।

अल्ला-हुम्मा सब-बीत क-द-मयहे हा अला सिरातेकल मुसतकीमे यवमा तु-सब्बेतो अकदामल मुमेनीना व–तु–ज़िल्लो अकदामा आदा–ए–कल मुजरेमीना ।

पहले सीधे पैर पर फिर दाबे पैर पर मसा कराई जाए ।

वुजू कराने के बाद मैय्यत को उपर बताए हुवे तरीके से तीन बार गुसल दें । पहला गुसल बोर की पत्ती और कन्कूरी वाले पानी से दे । ताकी मेल वगैरा साफ हो जाए । (साबुन भी ले सकते है) दूसरा गुसल कपूर और सन्दल (सुखड़) वाले पानी से दे । तोसरा गुसल खालिस पानी से दे । पहले गुसल में इस तरह निय्यत दिलावें ।

अल्ला-हुम्मा इन्नी उताह-हेरो हाज़ल मैय्यता (हाजेहिल मैय्ये-तता) ले उज़ीला अन-हुल (हा) जनाबता बिल ग़स लतिल अव्वलते बिसमिल्लाहे अल्लाहो अकबर

फिर पहले की तरह इसतिन्जा और वुजू कराने के बाद दूसरा गुसल सन्दल (सुखड़) कपूर वाले पानी से दे । निय्यत में बिल ग़स लतीस सानेयते पढ़े:—

फिर इसी तरह इसतिन्जा और वुजू कराने के बाद तीसरा गुसल खालिस पानी से दें । और निय्यत में बिलग़स लतीस साले सते पढ़े । और तीनों गुसल से फारीग होने के बाद टॉवेल से

बदन को साफ करें और फिर कफन पहनाऐ । गुसल के पहले ही कफन तैयार करके जनाजे में बिछादें कफन में सबसे पहले :-

१) चादर हे जिसमें मैय्यत का पूरा बदन लपेटा जा सके । २) लूंगी जिसे डूटी से टखने (पैर) तक बांधे । ३) कमीज़ (कफ़नी) जिसको मय्यत के गले में से पहनाए और जिससे आधा बदन ढक जाए, इन तीन चीज़ों के अलावा एक चड्डी(लंगोट) जिसे औरत की जगह पर कस कर बाँधे । (इस लंगोट के उपर लूंगी बांधे । जिसका उपर जिकर है) और बीच में रूई रखे और एक लम्बे टुकड़े से मय्यत को पगड़ी बांधे, औरत को ओड़नी पहनाए फिर सुखर (सन्दल) और कपूर वाले पानी में रुई भिगो कर मय्यत की पैशानी, नाक और तमाम सांधों घुटने, हाथ और पैर के सांधे मुंह,आँख, डाड़ी और सीने पर इस रूई के टुकड़े रखे, फिर सीने पर रुक्का और दांएँ हाथ में चिट्ठी रखकर दोनो तरफ से मय्यत को ढांके, सर, पैर और बीच में बंध बांधे और जनाजे को छतरी से मय्यत को ढांकें ।

कफन के हिस्से

एक लम्बी चादर, लूंगी, कमीस इनके अलावा पगड़ी या ओढ़नी, चड्डी और तीन बन्द गुसल के वक्त औरत ढापने का एक टुकड़ा और इसतिंजा कराने के लिये गस्साल के दाएँ हाथ पर लपेटने के लिये तीन टुकड़े, कफ़न का कपड़ा सूती और सफेद होना चाहिये सफेद कपड़ा न मिलेतो रंगीन भी चल सकताहै, रेशमी नहीं। मय्यत के माल में से पहले कफन दफन का खर्च निकालना चाहिये, फिर देन अदा करना चाहिये, अगर मय्यत ने हज न की हो तो हज का खर्च निकालना चाहिये, फिर उसकी वसीयत के मुताबिक पालन करना चाहिये फिर जो कुछ बचे विरासत में तकसीम करे, रसूलल्लाह स.आ. ने अपने लिये और अपने एहलेबेत के लिये जन्नत का हुनूत (खुशबु वाली चोज़) रखने का फरमाया था और हज़रत अली ने सल्मानुल फारसी के कफन पर ये दो बेत लिखी थी।

वफदतो अलल करीमे बे-गयरे ज़ादिन, मिनल ह-स-नाते बिल कलबिस सलीमी,
व हमलुज़ ज़ादे अकबहो कुल्ले शयइन, इज़ा कानल वुफूदो अलल करीमे,

(करीम के यहां नेकियों का तोशा लिये बगैर आया हूं दिल सलामती के साथ, करीम के यहाँ तोशा लेकर आना बहुत बुरी बात है) नबी सा. और अली सा. के इस अमल को इकतिदा करते हुए मय्यत की कब्र में खाकेशिफ़ा, आबे जम जम बरकत के लिये रखी जाती है । रुक्का चिठ्ठी में यासीन, अर्रहमान की सूरत और अल्लाह के नवानु नाम और दुआ होती है, अगर ये तबरुँकात न रखी जाय तो कोई बात नहीं. यह ख्याल बिलकुल गलत हे कि अगर यह तबरुँकात न होतो मय्यत जहन्नुम में जाती है, हरगीज नहीं, जन्नत जहन्नुम का दारो मदार तो नेको बद अमल पर हैं, अगर मय्यत मूमिन हे तो ये तबरुँकात और इसके नाम पर दिलाई जाने वाली फातिहा ख्वानो, कुरान ख्वानी, सदके, खाने, नमाज़ और हज वगैरा खैरात के काम इस मय्यत की रूह को फायदा पहुंचाते हैं ।

जनाजे को ले चलना, जनाजे को कांधों पर उठाकर नमाज़ की जगह (मस्जिद) वगैरा से ले जाय । जनाजे को उठाने वाला पहले जनाजे को पैर की तरफ से सीधे कांधे

फिर दूसरी तरफ से पहले सर, फिर पैर की तरफ से दाबे कधे पर उठाये, इसी तरह लोग ज़नाजे को कांधे पर उठाते हुए ले चलें ।

जनाज़ा उठाने वाले फक्त मर्द ही हों औरत न जनाज़ा उठाये, न चलें, न नमाज़ जनाज़ा और दफ़न में शरीक हों, कभी ऐसा इत्तिफाक हो जाय कि मरने वाला मर्द हो और वहां सिर्फ औरतें ही हों और उसका कोई महरम नहो तब औरतें गुसलो कफन के बगैर ही इस मय्यत को दफन करदें ।

इसी तरह अगर औरत मरजाये और मरदों के दरमियान उसका कोई महरम न होतो मर्द इस मय्यत औरत को गुसल कफन के बगैर ही दफन करदें ।

जनाजे को कांधों पर उठाकर ले जाना चाहिये । अलबत्ता ब वक्ते ज़रुरत किसी सवारी या गाड़ी में ले जा सकते है ।

जनाजे के साथ बुखूर दानी लेकर चलना मना है। अलबत्ता गुसल देने की जगह में बुखूर जलाया जाय, अगरबत्ती लगाई जाय तो कोई हर्ज नहीं, कब्र पर भी अगरबत्ती लगाई जा सकती हैं फूल की माला चढ़ाई जा सकती है,

जनाजे के आगे आगे नहीं चलना चाहिए पीछे चलना चाहिये, गाहे गाहे कंधा देना चाहिये ऐसा न हो कि चन्द आदमी जनाजा लेकर चलें और बाकी आदमी पीछे बातें करते हुए धीरे धीरे चलें। जनाजा और कब्र इबरत की जगह है वहां दुनिया की बातें करना मना है।

जनाजे में अमीरों गरीब सब यकसाँ हैं, कब्र आखिरत की पहली मंजिल हैं, इसके अदलो इंसाफ में सभी एक हैं। जिस तरह नमाज की सफों में, हज के मुकामात में सभी बराबर होते हैं।

जनाजे पर किसी किस्म की जीनत नहीं होनी चाहिये। जनाजा ले चलने में जरा जल्दी करना चाहिये, आहिस्ता आहिस्ता नहीं चलना चाहिये।

अगर किसी को जनाजे के साथ चलने का इरादा न हो तो ताज़ीम के लिये खड़ा न होना चाहिये,

मौला अली हर जनाजे के साथ नंगे पैर चलते और जूते अपने हाथ में ले लेते, अगर कभी जनाजे और शादी की दावत साथ साथ आई हो तो जनाजे की दावत का जवाब पहले दो । हर घर में से कम से कम एक आदमी को जनाजे में शरीक होना चाहिये । जब तक जनाजे पर कोई न आया हो तब तक तमाम लोगों पर आना फर्ज है । और जब चन्द लोग आ जाएँ तो बाकी लोग आएँ या न आएँ कोई हर्ज नहीं ।

नमाज़ जनाज़ा

जनाज़ा तैयार हो जाए तो उस पर नमाज़ पढ़ी जाए । नमाजे जनाजे का कोई खास वक्त मुकर्रर नहीं है, हर मुसलमान जो कल-मए-शहादत पढ़ता हो उसपर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जाए ।

वह मुमिन हो या मुनाफिक या आले मोहम्मद का दुश्मन या कोई न मालूम शख्स हो उसके ज़नाजे पर नमाज़ पढ़ी जाए ।

अगर मय्यत मुमिन है तो तीसरे तकबीरे के बाद उसके हक में दुआए मगफिरत की जाय, अगर आले-मोहम्मद का दुश्मन हे तो उसके लिये बददुआ की जाय, ना मालूम शख्स हे तो अल्लाह पर छोड़ो कि जैसा हो वैसा अल्लाह उसके अमल का बदला अता करे ।

अगर नाबालिग बच्चा या बच्ची हो तो दुआ करो कि अल्लाह-तआला उसके मां बाप को जजाये खैर अता करे । बहरहाल हर किसी मुस्लिम के जनाजे पर नमाज पढ़ना चाहिये और उसको दफन करना चाहिये (इस बारे में बोहरा पेशवा मोहम्मद बुरहानुद्दीन का अमल बिल्कुल शरए मोहम्मदी के खिलाफ है)

वह इस्लाह पसन्द मुमेनिन के जनाजों पर नमाज पढ़ना तो दर-किनार उसकी बे-हुरमती करते और करवाते हैं और उनकी मौत पर खुशी मनाते हैं । अफसोस ।

नमाजे जनाजा में रूकू सुजुद नहीं हैं । खड़े

खड़े ही निय्यत के बाद पांच तकबीरे दिये जाए और हर तकबीरे के बाद दुआ पढ़ी जाय, पांचवे तकबीरे की दुआ के बाद दायें, बायें जानिब मुंह फेर कर **अस्सलामो अलयकुम व-रहमतुल्लाहे व ब-र-कातुहु** कहा जाय ।

नमाज़ शुरु करने के पहले कहा जाय । **अस्सलाता अलल जनाजते या मा-अ-शरल मुमेनिना रह-मा-कुमुल्लाहो अस्सलाता अस्सलात,**

फिर कल-मए शहादत के बाद आवाज से चन्द आयतें पढ़ी जायें जिनमें मौत का जिक्र है, हर आयत के बाद कल-मए शहादत पढ़ा जाए ।

(अगर कोई शख्स इन आयात की तिलावत न करे तो कोई हर्ज नहीं) फिर इस तरह निय्यत ली जाय ।

उसल्ली सलातल जनाज़ते खम्सा तकबीरातिन लिल्लाहे अज्जा-व-जल्ला मुस्तकबिलल का-बतिल हरामे अल्लाहो अकबर ।

इमाम के पीछे नमाज पढ़ने वाले **मोअ-तम-मन बिल इमामे अल्लाहो अकबर,** कहें

पहले तकबीरे के बाद अल्लाह का हम्द करे और कहे ।

अलहम्दो लिल्लाहे अहलिल मजदे वल किबरीयाए वल अज़-मते वल कुदरते वस्सनाये अल्लाहो अकबर ।

दुसरे तकबीरे के बाद सलवात पढ़े और कहे

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मदिन फिल अवल्लीना व सल्ले अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मदिन फिल आखेरीना अल्लाहो अकबर,

तीसरे तकबीरे के बाद मय्यत के लिये दुआ करे और कहे ।

अल्लाहुम्मग़ फ़िर-लेहाज़ल मुत-वफ्फा जुनूबहू वहशुरहो फी जुम-रतील नबिय्ये मोहम्मदिन व आलेहित्ताहेरीन अल्लाहो अकबर ।

अगर औरत होतो कहे ।

अल्लाहुम्मग़ फ़िर-लेहाजेहिल मुत वफ्फ़ाते जुनूबहा वहशुरहा फी जुम-रतील नबिय्ये मोहम्मदिन व आलेहित्ताहेरीन अल्लाहो अकबर ।

अगर मय्यत नाबालिग हो तो कहे ।

अल्लाहुम्मज अलहो ले-वालेदयहे सल-फन व फ-र-तन व-अजरन व-जुख़रा बेहक्के मोहम्मदिन व आलेहित्ता-हेरीन अल्लोहो अकबर ।

अगर मय्यत नाबालिग लड़की होतो कहे ।

अल्लाहुम्मज अलहा ले-वालेदयहा सल-फन व फर-तन व-अजरन व-जुख़रा बेहक्के मोहम्मदिन व आलेहित्ता-हेरिन अल्लाहो अकबर ।

चौथे तकबीरे के बाद मुमिन के लिये दुआ करे और कहे ।

अल्लाहुम्मग़ फ़िरली वले-वालेदय्या वलिल मुमेनीना वल मुमेनाते - अल अहयाये मिन-हुम वल-अमवाते इन्नका वलीयुल ह-सनाते व ग़ाफेरूस-सय्येआते अल्लाहो अकबर ।

पांचवे तकबीरे के बाद सलवात पढ़े और कहे ।

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन व आले-मोहम्मदिन कमा-तुहिब्बो-वतरदा अस्सलामो अलयकुम व-रहमतुल्-लाहे व बरकातुहू ।

इसी तरह दाबी तरफ मुंह फेर कर कहें ।

अस्सलामो अलयकुम व-रहमतुल्लाहे व बरकातुहू ।

सलाम के बाद सू-रतुल फातेहा (अल हम्दो) की तिलावत करके मय्यत का नाम लेकर दुआ करे । और बाद में रिश्तेदारों को ताजियत दे ।

जनाजे को कांधों पर उठाकर मकबरे तक ले जाया जाय, और जनाजे को क़ब्र के उस किनारे पर रखे जो किबले की जानिब होता हो मय्यत अगर औरत होतो नमाज़ पढ़ाने वाला उसके मुंह के मुकाबिल खड़ा रहे और मर्द होतो सीने के मुकाबिल खड़ा रहे।

एक से ज्यादा और अलग-अलग जिन्स के जनाजे एक ही वक्त में आजाये तो सभी जनाजों पर एक ही नमाज़ पढ़ी जा सकती हैं। जनाजे रखने की तरकीब इस तरह से हो।

❋ किबला ❋

1) बालिग़ औरतें _____
2) नाबालिग़ लड़कियाँ _____
3) खुनसा (दरमियानी जिंस) _____
4) नाबालिग़ लड़के _____
5) बालिग़ मर्द _____

जब जनाजे पर सुल्ताने वक्त या आलिम हाजिर हो तो मय्यत के वली (रिश्तेदार) से वह बेहतर है के नमाजे जनाज़ा पढ़ाये और अगर औरत के बाप की तरफ का रिश्तेदार हाजिर होतो वह उसके शोहर से बेहतर है, बजाए शोहर के वह नमाजे जनाजा पढ़ाये ।

(दा-ए-मुल इस्लाम के इस बयान से साबित हुवा के नमाजे जनाजा में किसी की इजाजत (रजा) की जरूरत नहीं है ।)

मय्यत के ऐसे उज्व (अंग-हिस्से) पर नमाज पढ़ी जाये के अगर वह उज्व (हिस्सा) मय्यत से अलग हो जाये, तो मौत वाक्ए हो जाये, मय्यत का कोई उज्व (हिस्सा) जैसा कि हाथ, पैर वगैरा कट गया होतो उसको भी लाश के साथ दफन कर दिया जाये ।

दफ़न का बयान

जनाज़ा उठाने वाले या आमतौर से किसी वक्त भी ज़ियारत के लिये कब्रस्तान जाने वाले

जब मक़बरे में दाख़िल हो तब इस तरह तीन बार कहे :-

अस्सलामो अलयकुम या आहलद-दारे अन्तुमुस साबेकून व नाहनो इन्शा अल्लाहो अन करीबिन बेकुमे लाहेकून ।

(यानि ऐ घर वालो तुम पर सलाम तुम आगे चले गये हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो बहुत जलदी तुमसे आ मिलेंगे)

मय्यत की कब्र तीन (३) जिरा पांच (५) फिट से ज्यादा गेहरी न खोदी जाए, चौड़ाई डेड़ फिट होनी चाहिये ।

कब्र मय्यत की लम्बाई के मुताबिक खोदी जाये । कब्र खुदने के बाद किबले की तरफ वाली दीवार खोदकर लहद बनाई जाये, अगर कब्र में पानी निकल आए तो चटाई बिछाकर मय्यत को दफन किया जा सकता है ।

कब्र से निकली हुई मिट्टी ही कब्र में डाली जाए, बाहर की मिट्टी शामिल न की जाए ।

मय्यत को जनाजे से निकाले और कब्र में सुलाए उस वक्त उसको सिधी करवट पर सुलाए ।

कफन से मुंह खोलकर उसकी नाक को मिट्टी से लगाए और तीनों बन्द खोलदे और पढ़े-

बिस्मिल्लाहे वबिल्लाहे व-अलामिल्लते रसुलिल्लाहे सल-लल्लाहो अलयहे वआलेही ।

मय्यत को कब्र में किबला रूख करे उस वक्त यह दुआ पढ़े ।

अल्लाहुम्मा लक्कीनहो हुज्ज-त-हू व सा-इद रू-हहु व लक्केही मिनका रव हन व रय-हानन व मगफेरतन व रिजवाना ।

अगर औरत होतो ये पढ़े:-

अल्लाहुम्मा लक्कीन हा हुज्ज-त-हा व सा-इद रू-हहा लक्के हा मिनका रवहन व रेहानन व मगफेरतन व रिज़वाना ।

कब्र में जो मिट्टी डाले उस पर यह पढ़े:-

मिनहा खलकना-कुम व फीहा नु-ई-दो-कुम व मिनहा नुखरेजो-कुम ता-रतन उखरा ।

और उस मिटटी को मय्यत के मुंह पर डाले और मय्यत को मिटटी से ढाकने के बाद तमाम हाज़िर लोग मिटटी को तीन तीन खोबे डालें और कहें।

ईमानन बेका व तसदीकन ले रसूलेका ईकानन बे बा-सेका हाज़ा मा व आदर रहमानो व सदकल मुर सलून।

(ए अल्लाह में तुझे मानता हुं तेरे रसूल की तसदीक करता हुं तेरे कब्र से उठाने का यकीन रखताहुं, रहमान और पेगम्बरों का वादा सच्चा है)

कब्र बन्द हो जाने के बाद उस पर पानी छिड़के और कलमए शहादत पढ़े और मय्यत के सर की जगह मिटटी में अंगूठा खोसकर कहे। **बिस्मिल्लाहे खतमतोका मिनश शयता-निर्रजीम अन-यद-खो-लका।**

(अल्लाह के नाम से में मोहर करताहूं कि शैतान दाखिल न हो) फिर कब्र पर गिलाफ ढांके और

कुल–हो–वल्लाहो अहद (3 बार), कुल–अऊज़ोबे रब्बिल फलक (1 बार), कुल-अऊज़ोबे-रब्बिन-नास (1 बार), अलहम्दो की सुरत (1 बार) और अलिफ़–लाम का पेहला रूकू उला-एका हुमुल मुफ़्ले-हून तक एक मरतबा पढ़े। इन सूरतों के पढ़ने के बाद स-द-कल्ला की दुआ पढ़े।

फ़ातेहा पढ़ना

सदकल्ला की दुआ पढ़ने के बाद कब्र की ज़ियारत करके मय्यत के हक में फातेहा पढ़े। अगर मय्यत दाई या हुदूदे किराम में से होतो बड़ी सदकल्ला पढ़े। (जो बड़े सहिफे में लिखी हुई है।)

हिन्दुस्तान में तीन रोज तक सदकल्लाह पढ़ने का रिवाज है। उदयपुर में कब्र के पास जाकर सदकल्लाह पढ़ने का और तिसरे रोज फातेहा का खाना करने का रिवाज है।

इसी तरह दसवां, चालिसवा, छे माही बरसी करने की आमतौर से रस्म है।

जरूरी–बातें

हमल वाली औरत का शोहर मर जाए और चार महीने, दस रोज तमाम होने के पहले ही बच्चा पैदा हो जाए तो उसको इद्दत के चार महीने, दस रोज तमाम करना चाहिये । और अगर चार महिने दस रोज तमाम हो जाएँ और बच्चा पैदा नहो तो उसे बच्चा पैदा होने तक इद्दत में रहना चाहिये ।

सफर में शोहर मर जाए तो उसकी मौत की खबर आने के बाद ही औरत इद्दत में बेठे । और उसी दिन से इद्दत की मुद्दत गिनी जाए ।

सफर में शोहर बीवी को तलाक दे तो तलाक वाके होने के बाद से ही तलाक की मुद्दत गिनी जाए ।

इसलाह तलब रस्मो रिवाज

एसे रस्मो रिवाज के शरीअत में जिनके लिये मनाई नहो तो वह मारूफ है, (यानि जाईज है)

और ऐसे रस्मो रिवाज जिनके लिये शरीअत में मनाई हो उसको नहीं करना चाहिये ।

उदयपुर में सोगवारी की रस्में बहुत ज्यादा हें, उनको मिटाना बहुत जरूरी है ।

१) बिवी अपने शोहर के मरने के बाद सिर्फ चार महीने दस रोज़ इद्दत पाले और सोग वार में रहे । इससे ज्यादा सोगवारी में रहना मना हे । दिगर रिश्तेदार की मौत पर फक्त तीन रोज तक ही सोगवारी में रहने की इजाज़त है ।

२) नबीए करीम (स.अ.) की सुन्नत के तीन रोज तक मय्यत के अजादारों के लिये दिगर रिश्तेदारों की तरफ से खाने पिनेका इन्तेजाम हो,

मगर उदयपुर में उल्टा रिवाज हे, वह ये के तीन दिन तक अजादार दूसरे रिश्तेदारों को खाना खिलाते हैं, और तीन दिन खत्म होंने के बाद रिश्तेदार अजादारों के यहां सात रोज तक खाना भेजते हैं । ये इसराफी है, और दसवें तक

अजादारों के यहां सोग की बैठक होती है । ये मुनासिब नहीं इस रस्म को बन्द करना चाहिये, तीन रोज से ज्यादा मय्यत वाले के घर में सोग की बैठक नहीं होनी चाहिये ।

३) ईद के रोज मय्यत वाले के घर में ताजीयत की बैठक रखी जाती है, यह भी गलत हे । इसको बन्द करना चाहियें ।

४) दसवें, चालिसवें, छे माही, और बरसी के सिपारे के लिये कब्र के पास जाने की रस्म हैं अगर इन सीपारों की रस्में मस्जिद में ही अदा करदी जाएँ तो यह एक इस्लाहो कदम होगा ।

५) इद्दत खतम होने के दस दिन पहले जो मजलिसें पढी जाती हैं वह अच्छी बात हे जिक्रे हुसैन (अ.स.) से गम गलत होता हे लेकिन कोई शख्स यह मजलीसें न करे तो उसको मलामत करना बहुत ही बुरी बात है । कोई चाहे करे या न करे इख्तियार है ।

६) मय्यत के नाम से मस्जिदों की मरम्मत

मद्रसे की तरक्की और समाज की बेहबूदी के लिये तामीरी काम करना भी बहुत जरूरी है । मय्यत के नाम से तामीरी काम करने में मय्यत की रुह को सवाब मिलता है ।

७) मय्यत के नाम पर खाना करने से मय्यत की रूह को सवाब मिलता है । यह नेक रस्म है । लेकिन किसी शख्स की अगर ताकत नहो तो कर्ज लेकर भी खाना करना वाजिब समझ किया गया हे वह गलत हे । हर शख्स अपनी ताकत के मुताबिक ही अमल करे, अगर कोई न करे तो उसपर ताना ज़नी करना और कहना के मरने वाला क्या कोई लक्कड़ था जिसे गाड़ दिया, एसा कहना बिलकुल ना मुनासिब हे ।

जबरजस्ती खाना करने की या कराने की शरीअत भी इजाज़त नहीं देतो शादी ब्याह वगैरह हर एक काम में इसी तरह किफायत शिआरी से काम करना चाहिये ।

८) शरिअत के आमाल में हज एसा अमल है जो मोत के बाद भी अदा किया जा सकता